सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंट, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा:-8	विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक	पाठ:1 मेरी मातृभूमि

मौखिक

(क) मातृभूमि की शोभा न्यारी है क्योंकि उसकी मिट्टी धूल महकता चंदन है और उसकी गोद में पलकर हम बड़े हुए हैं और अपने पैरों पर खड़े हुए हैं।

(ख) मातृभूमि के सामने स्वर्गलोक की सुंदरता, सुषमा और गरिमा सब एक-एक करके हार गई है।

(ग) 'मेरी मातृभूमि' कविता में कवि ने देश प्रेम के भाव को प्रदर्शित किया है। इसमें उन्होंने मातृभूमि के प्रति अपना प्रेम, गौरव और समर्पण व्यक्त किया है।

(घ) मातृभूमि हमारे लिए इसलिए पूजनीय होती है क्योंकि यह माँ के समान हमारा ध्यान रखती है, हमारा पालन-पोषण करती है और हमारी सारी आशाएँ-अभिलाषाएँ पूरी करती है।

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) कवि अपनी मातृभूमि को इसलिए वंदन कर रहा है क्योंकि वह उसकी गोद में पलकर बड़ा हुआ है और उसकी धूल उसके लिए चंदन के समान महक रही है। उसके लिए उसकी मातृभूमि सारी दुनिया के सभी देशों में सबसे सुंदर है।

(ख) कवि ने अपनी मातृभूमि की मिट्टी से तिलक लगाने की बात कही है क्योंकि उसे अपनी मातृभूमि की मिट्टी से प्यार है और मातृभूमि के साथ उसका जो पुत्र का नाता है, उस पर गर्व है।

(ग) जिस प्रकार कल्पवृक्ष सारी इच्छाओं-अभिलाषाओं को पूरा करता है, उसी तरह मातृभूमि भी हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करती है।

(घ) कवि ने मातृभूमि की तुलना स्वर्गलोक की सुंदरता से की है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) इस पंक्ति में कवि यह कहना चाह रहा है कि मुझे हर प्रकार से मातृभूमि ने ही बनाया है क्योंकि मैं उसी की गोदी के पालने में खेला, झूला और अपने पैरों पर खड़ा हुआ अर्थात् उसने मुझे एक माँ के समान प्यार दुलार दिया है। मेरे निर्माण में पूरी तरह मेरी मातृभूमि का ही योगदान है।

(ख) कवि ने इस कविता में देशभक्ति की भावना इस प्रकार व्यक्त की है कि इसमें उसका मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव उभर कर आया है। कवि अपनी मातृभूमि के प्रति गर्व का अनुभव करता है। उसको बार-बार वंदन करता है और उसके लिए अपना सर्वस्व समर्पण करना चाहता है।

(ग) कवि ने मातृभूमि की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहा है कि मातृभूमि ने सब कुछ सहन किया पर कभी भी मुझसे न कुछ कहा, न कुछ चाहा। मेरी मातृभूमि की शोभा स्वर्गलोक से भी ज़्यादा सुंदर एवं न्यारी है। उसके सामने तो स्वर्ग की सुंदरता भी हार गई है। दुनिया में अनेक सुंदर-सुंदर देश हैं, पर मेरी मातृभूमि उन सभी देशों में सबसे सुंदर है।

(घ) कविता से हमें अनेक नैतिक मूल्य सीखने को मिलते हैं, जैसे- हमें अपने देश से प्रेम करना चाहिए। अपनी मातृभूमि को हमेशा वंदन करना चाहिए। उसने हम पर अनेक उपकार किए हैं, अतः हमें हमेशा मातृभूमि के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। और उसके लिए अपना सर्वस्व समर्पण करने की भावना रखनी चाहिए।

पठित गद्यांश

(क) कविता- मेरी मातृभूमि कवि द्वारका प्रसाद माहेश्वरी

(ख) कवि अपनी मातृभूमि की मिट्टी से तिलक लगाता है।

(ग) 'उसी की' सर्वनाम मातृभूमि के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(घ) कवि को अपनी मातृभूमि के साथ 'माता-पुत्र' के नाते पर गर्व है।